भारतीय ज्ञान विश्व का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान

श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय सी.टी.ई., केशव विद्यापीठ, जामडोली, जयपुर में इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (ICSSR), नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित **''भारतीय वाड्.मय के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा की संकल्पना''** विषय पर होने वाली दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के 28 फरवरी को आयोजित उद्घाटन सत्र में **मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री कलराज मिश्र, माननीय राज्यपाल, राजस्थान** ने कहा कि भारत पूर्व में सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शक रहा है। हजारों सालों पूर्व हमारे श्रेष्ठ ऋषि–मुनियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान किए। प्राप्त ज्ञान को उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति तक प्रसारित किया। विश्व की प्रथम पुस्तक ऋग्वेद मानी गई। वेदों को ईश्वर की वाणी के तुल्य माना गया। हमारे भारत देश का वाङ्मय अत्यन्त विपुल एवं विवधता सम्पन्न है। इसमें धर्म, दर्शन, भाषा व्याकरण आदि के अतिरिक्त गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, रसायन, धातुकर्म, सैन्य, विज्ञान आदि भी वर्ण्यविषय रहे हैं। कोई भी देश या समाज तभी अपना सर्वांगीण विकास, जिसमें आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, भौगोलिक आदि तब कर सकता है, जब वहां के शिक्षक गुरु होने के सामर्थ्य से युक्त हों। वे केवल धनोपार्जन के लिए नहीं अपितु देशोत्थान, समाजोत्थान एवं मानवोत्थान हेतु कार्य करें। भारतीय साहित्य में निहित भारतीय संस्कृति के आधार वाक्य ''वसुधैव कुटुम्बकम'', ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' एवं देशभक्ति की भावना से ओत–प्रोत हों। जो विद्यार्थियों में देश और संस्कृति के प्रति प्रेम जागृत कर सकें और उन्हें मूल्याधारित संस्कारक्षम शिक्षा दे सकें। इसके लिए शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में भारतीय वाङ्मय में निहित ज्ञान का समावेश किया जाना आवश्यक है। जिससे देश के भावी शिक्षकों में देश के प्रति गौरव, प्रेम और समर्पण का भाव जग सके। आपने सभी से आग्रह किया कि आप भारतीय वाङ्मय का अध्ययन अवश्य करें। इससे निश्चित रूप से हमें हमारे लक्ष्य प्राप्त होंगे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. जे.पी.सिंघल, पूर्व कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय के अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे देश का ज्ञान विश्व में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है। सम्पूर्ण विश्व इस ज्ञान को स्वीकार करता है, किन्तु बडे दुःख का विषय है कि हमारे ही देश में इसकी उपेक्षा की जाती है। विश्व में एकमात्र हमारी भारतीय संस्कृति जीवन्त है, शेष पाश्चात्य संस्कृति यांत्रिक है। आपने कहा कि शिक्षक में श्रद्धा होनी चाहिए, मन शुद्ध होना चाहिए, शिक्षा में गुणवत्ता हो, विषय की अच्छी जानकारी हो। ऐसा शिक्षक होना चाहिए जो समाज को दिशा देने वाला हो, जो विद्यार्थियों के अपने देश की श्रेष्ठता से अवगत करा सके। इन सभी पक्षों को ध्यान में रखकर भारतीय वाड्.मय विषय पर आयोजित की गई यह संगोष्ठी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है।

उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय प्राचार्य एवं संगोष्ठी संयोजक प्रो. रीटा शर्मा ने अतिथियों का परिचय कराया। केशव विद्यापीठ समिति का परिचय केशव विद्यापीठ समिति के संयुक्त सचिव, श्री अमरनाथ चंगोत्रा द्वारा कराया गया। कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. रामकरण शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर समिति के पूर्व अध्यक्ष, डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल, महाविद्यालय प्रबंध समिति के मंत्री श्री सूर्यनारायण सैनी, पूर्व मंत्री डॉ. विजय कुमार विशष्ठ, अन्य पदाधिकारीगण, विभिन्न विश्वविद्यालयों, शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों से पधारे हुए कुल 350 शिक्षाविदों, शोधार्थियों एवं प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

आपने बताया कि उद्घाटन सत्र के पश्चात् आयोजित प्रथम पूर्ण सत्र में प्रो. दयानन्द भार्गव, सम्प्रति अध्यक्ष, वेदवाचस्पति पं0 मधुसूदन ओझा वेद विज्ञान पीठ राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर ने भारतीय वाड्.मय के विषय में विस्तृत जानकारी साझा करते हुए बताया कि प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में ज्ञान का विशेष स्थान था। अपने श्रेष्ठ ज्ञान के कारण ही भारत विश्वगुरू रहा। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो. एम.सी. शर्मा. निदेशक, शिक्षक शिक्षा, यूनीसेफ, नई दिल्ली द्वारा वैश्विक स्तर पर तेजी से परिवर्तन हो रहा है। ऐसे में प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति और वर्तमान ज्ञान में समन्वय की आवश्यकता है।

संगोष्ठी समन्वयक डॉ. मीनू अग्रवाल ने बताया कि द्वितीय पूर्ण सत्र में प्रो. रीटा अरोड़ा, रिसर्च एडवाइजर, शिक्षा पीठ, जे.एन.यू. जयपुर ने भारतीय वाड्.मय एवं शांति शिक्षा विषय पर विचार व्यक्त किए। इसी सत्र में प्रो. मथुरेश्वर पारीक, पूर्व डीन, शिक्षा संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर ने भारतीय वाड्. मय एवं पर्यावरण शिक्षा के विषय में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर डॉ. बनवारीलाल नाटिया, अध्यक्ष,

एनसीटीई–एनआरसी समिति, डॉ. ममता भाटिया, क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू, जयपुर; डॉ. इंदू रवि, सहायक निदेशक, इग्नू, जयपुर केन्द्र का भी सानिध्य प्राप्त हुआ।

द्वितीय सत्र के पश्चात् विभिन्न तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया। जिनमें प्रो. संतोष मित्तल, प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर; प्रो. वाई. एस. रमेश, प्रोफेसर, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर ने भारतीय वाड्.मय एवं शिक्षा मनोविज्ञान; डॉ. राधारानी सक्सेना, पूर्व प्रोफेसर, वनस्थली विद्यापीठ; डॉ. आबिदा परवीन, पूर्व प्राचार्य, तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय; डॉ. सावित्री माथुर, प्राचार्य, भवानी निकेतन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय; डॉ. प्रतीक्षा शर्मा, प्राचार्य, रामाकृष्णा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय; डॉ. नित्या तोमर, प्राचार्य, ब्राइट फ्यूचर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय; डॉ. मंजू पाराशर, प्राचार्य, बालाजी टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज; डॉ. मंजू शर्मा, डीन एवं विभागध्यक्ष, शिक्षा विभाग, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ तथा प्रतिभागियों ने पत्र वाचन किए।

द्वितीय दिवस दिनांक 29 फरवरी को संगोष्ठी के प्रथम सत्र में प्रो. बनवारीलाल जैन, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनू, नागौर ने भारतीय वाड्.मय एवं शांति शिक्षा पर चर्चा करते हुए सकारात्मक सोच एवं शांति स्थापना पर बल दिया। प्रो. कमला वशिष्ठ, निदेशक, शिक्षा विभाग, जे.एन.यू. जयपुर ने भारतीय वाड्.मय और मूल्य शिक्षा के विषय पर वार्ता देते हुए वेदों, उपवेदों, वदांगों, स्मृतियों एवं अन्य ग्रन्थों में निहित मूल्य शिक्षा की व्याख्या की। द्वितीय सत्र में प्रो. विनोद शर्मा, प्रोफेसर, आर.वी.एस. कॉलेज, आगरा, उ.प्र. ने बताया कि आज की शिक्षा कैसी हो? आपने बताया की भारतीय वाड्. मय में गहन चिन्तन समाहित है, जिसे अपने व्यवहार में लाने की आवश्यकता है। इसके पश्चात् प्रो. आर.पी. पाठक, राष्ट्रीय केन्द्रीय संस्कृत संस्थान ने गुरु की महत्ता का वर्णन करते हुए बताया कि प्रत्येक शिक्षक को अपने कर्त्तव्यों का पालन पूर्ण रूप से करना चाहिए। आपने विद्या और शिक्षा में अन्तर करते हुए कहा कि हम अपने विद्यालयों में बालकों को विद्या प्रदान कर रहे हैं अथवा शिक्षा। हमें बालकों को जीवन जीने की शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है। तृतीय सत्र में डॉ. विवेक कोहली, प्राचार्य, सोहन लाल डी.ए.वी. कॉलेज, अम्बाला, हरियाणा ने शिक्षण की कला पर विभिन्न रोचक उदाहरणों के माध्यम से प्रकाश डालते हुए शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट किया।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. चांदकिरण सलूजा, सदस्य, एम.एच.आर.डी. हाईपावर कमेटी, नई दिल्ली ने अपने प्रेरक उद्बोधन में शिक्षा के चार स्तम्भ–ज्ञान हेतु शिक्षा, कर्म हेतु शिक्षा, मिलकर रहने हेतु शिक्षा और मनुष्य बनने हेतु शिक्षा बताए। आपने बताया कि ज्ञान और व्यवहार आपस में संबंधित हैं। अतः शिक्षा ज्ञान और व्यवहार पर आधारित होनी चाहिए अर्थात् व्यावहारिक हो। शिक्षा में भाषा का स्थान सर्वोपरि है। अध्यापक को भाषा में निपुण होना आवश्यक है। आपने शिक्षक के चार प्रकार बताए–शिक्षक, अध्यापक, गुरु और आचार्य और आचार्य को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए आपने कहा कि भारतीय वाड्.मय एक शिक्षक को आचार्य बनाता है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे प्रो. जे.पी.सिंघल, पूर्व कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय ने अपने आशर्वचन में आनन्द रामायण के एक प्रसंग के माध्यम से कहा कि आत्मानुभूति का अत्यधिक महत्व है। जब शिक्षक को शिक्षा की अनुभूति हो जाती है। तब वे शिक्षा के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर सकते हैं।

समापन सत्र में धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ. रामकरण शर्मा द्वारा दिया गया। द्वितीय दिवस के विभिन्न सत्रों में केशव विद्यापीठ समिति के संयुक्त सचिव, श्री अमरनाथ चंगोत्रा; महाविद्यालय प्रबंध समिति के मंत्री श्री सूर्यनारायण सैनी; डॉ. बनवारीलाल नाटिया, अध्यक्ष, एनसीटीई–एन. आर.सी. समिति, नई दिल्ली; डॉ. प्रमिला दुबे, डीन, शिक्षा संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर; डॉ. अनिता सोनी, डीन, राज ऋषि भतृहरि मतस्य विश्वविद्यालय, अलवर; डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, से.नि. प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय अजमेर; महाविद्यालय प्राचार्य एवं संगोष्ठी संयोजक डॉ. रीटा शर्मा, संगोष्ठी समन्वयक डॉ. मीनू अग्रवाल, सह–समन्वयक डॉ. रेणु शर्मा, समिति के सदस्य डॉ. शकुन्तला खत्री, डॉ. भावेश सिंहवाल, डॉ. धर्मेन्द्र शर्मा, संकाय सदस्य एवं अन्य शिक्षाविद्ों, शोधार्थियों, प्रशिक्षणार्थियों की उपस्थिति रही।

राष्ट्रीय संगोष्ठी
28-29 फरवरी, 2020

राष्ट्रीय संगोष्ठी
28-29 फरवरी, 2020

राष्ट्रीय संगोष्ठी
28-29 फरवरी, 2020

राष्ट्रीय संगोष्ठी
28-29 फरवरी, 2020